विश्वकर्मा जयंती

सृष्टि के शिल्पकार हैं विश्वकर्मा

ब्रह्मा पुत्र विश्वकर्मा ऐसे अद्वितीय शिल्पकार हैं, जिन्होंने सृष्टि को सबसे पहले 'शिल्प विज्ञान' से परिचित कराया। एक ऐसे शिल्पकार जिनका तीनों लोकों में कोई सानी नहीं है। अस्त्र-शस्त्र, वाद्य यंत्रों के साथ-साथ कई पुराणों की रचना का भी श्रेय उन्हें है। वह तीनों लोकों के रचनाकार तो थे ही, रावण की सोने की लंका और हस्तिनापुर, वृंदावन और द्वारिका की रचना करने वाले देवशिल्पी भी थे।

विश्वकर्मा पुराण के अनुसार 'सूत जी' ने ऋषियों को भगवान विश्वकर्मा की कथा सुनाते हुए कहा, जब आदि नारायण की आज्ञा से आदि ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की तो पृथ्वी अस्थिर थी। इसे स्थिर करने के लिए ब्रह्मा ने प्रभु से प्रार्थना की तो आदि नारायण ने विराट ब्रह्मा का स्वरूप धारण करके डगमगाती धरती को स्थिरता प्रदान की। देवी देवताओं के स्थान और उनके आवासों की रचना की। स्वर्ग का निर्माण किया। शास्त्रों में उन्हें सृष्टिकर्ता प्रजापति परमात्मा के रूप में माना गया। धातु और विधातु, पृथ्वी और प्राणि जगत का जनक होने के साथ ही सभी देवों को नाम देने वाला भी बताया गया है। उन्होंने ही परमपिता ब्रह्मा को रचनात्मकता का ज्ञान देकर शिल्प विज्ञान से सृष्टि को परिचित कराया। मानव कल्याण के लिए अथर्ववेद के उपवेद की रचना की। विश्वकर्मा को देवताओं का शस्त्र डिजाइनर भी कहा जाता है।

इक्कीसवीं शताब्दी में हम भले ही वैज्ञानिक दृष्टि से विमान तैयार करें लेकिन पुष्पक विमान हमारे लिए आज भी रहस्य है। सोने की लंका ही नहीं, द्वापर में हस्तिनापुर में पांडवों के रंगमहल की वह इमारत जिसे देखकर दुर्योधन नहीं समझ सका कि कहां पानी है और कहा हैं रेत? जिसे देखकर द्रौपदी की हंसी छूट गई और जहां से महाभारत की नींव पड़ गई। स्वर्गलोक में देवराज इंद्र की इंद्रसभा इन्हीं देवशिल्पी की कला का अद्भुत नमूना रही है।

कहते हैं कि, बृहस्पति की बहन योगसिद्धा और ब्रह्मा जी के पुत्र कहलाने वाले विश्वकर्मा जी को ऋग्वेद में बहुमुखी कलाधर्मी, शिल्पधर्मी व अदृश्य शक्तियों का रचनाकार बताया गया है।

कहा जाता है कि लंकाधिपति रावण खुद एक महान वास्तुकार था, लेकिन जब रावण के मन में सोने की लंका के निर्माण की बात आई तो अपने आराध्य देव शिवशंकर से अनुरोध किया कि वह विश्वकर्मा जी का सहयोग दिलाएं। त्रिपुरारी शिव के आग्रह पर ही विश्वकर्मा ने सोने की लंका बनाई। द्वापर में इन्हीं देवशिल्पी ने द्वारिका का भी निर्माण किया।

देश में आज विशालकाय इमारतों के रूप में फेंगशुई, इंजीनियरिंग, वास्तु कला के अद्भुत नमूने मिलते हैं। लेकिन यदि कहा जाए कि ये सभी देवशिल्पी विश्वकर्मा की देन हैं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। देवताओं के शस्त्रों से लेकर ब्रह्मांड को शस्त्र, शिल्पकला, वास्तुकला, फेंगशुई की पहचान कराने का श्रेय भी उन्हें ही जाता है। भारत में अधिकतर क्षेत्रों में तो देवशिल्पी विश्वकर्मा की जयंती 17 सितंबर को ही मनाई जाती है लेकिन स्कंद पुराण, भविष्य पुराण आदि ग्रंथों में माघ शुक्ल त्रयोदशी को भी उनकी जयंती बताई गई है। पूरे देश में 17 सिंतबर को हर बड़ी फैक्ट्री, इंजीनियरिंग व लौह कार्य करने वाले लोगों, मिस्त्रियों, वर्कशापों आदि में देव शिल्पी की बड़ी ही आस्था के साथ पूजा की जाती है। जिसमें प्राचीन विश्वकर्मा महापुराण का पाठ किया जाता है।

प्रस्तुतिः देव शर्मा